NEERAJ®

मानव विज्ञान और शोध विधियां

(Anthropology and Research Methods)

B.A.N.C.-131

B.A. General - 1st Semester

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: Vaishali Gupta

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878 E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

मानव विज्ञान और शोध विधियां

(Anthropology and Research Methods)

Question Paper—June-2023 (Solved) 1-2

Question Paper—December-2022 (Solved) 1

Question Paper—Exam Held in July-2022 (Solved) 1-2

Question Paper–Exam Held in February-2021 (Solved) 1-4

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. मानव विज्ञान की परिभाषा, कार्यक्षेत्र और महत्त्व 1
(Definition, Scope and Significance of Anthropology)

2. मानव विज्ञान की शाखाएं 16
(Branches of Anthropology)

3. संबद्ध क्षेत्रों के साथ मानव विज्ञान का संबंध 34
(Relationship of Anthropology with Allied Fields)

4. मानव विज्ञान का उद्‌भव और विकास 45
(History and Development of Anthropology)

5. भारत में नृविज्ञान 57
(Anthropology in India)

6. मानव विज्ञान में क्षेत्रकार्य परंपरा 69
(Fieldwork Tradition in Anthropology)

7. जैविक मानव विज्ञान की अवधारणाएं और विकास 80
(Concepts and Development in Biological Anthropology)

8. सामाजिक मानव विज्ञान की अवधारणाएं और विकास 88
(Concepts and Developments in Social Anthropology)

9. पुरातात्विक मानव विज्ञान की अवधारणा और विकास 100
(Concepts and Developments in Archaeological Anthropology)

10. मानवशास्त्रीय अनुसंधान के दृष्टिकोण 107
(Approaches of Anthropological Research)

11. विधि, उपकरण और तकनीक 116
(Methods, Tools and Techniques)

12. अनुसंधान/शोध की रूपरेखा 135
(Research Design)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2023

(Solved)

मानवविज्ञान और शोध विधियाँ

(Anthropology and Research Methods)

B.A.N.C.-131

समय : 3 घण्टे] *[अधिकतम अंक : 100*

नोट : *किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक खण्ड में से कम-से-कम दो प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खंड-क

प्रश्न 1. मानव विज्ञान क्या है? मानव विज्ञान की व्यापकता पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-1, 'मानव विज्ञान की परिभाषा' तथा पृष्ठ-2, 'मानव विज्ञान के उद्देश्य'

प्रश्न 2. सामाजिक मानव विज्ञान के इतिहास तथा विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-30, प्रश्न-8

प्रश्न 3. मानवविज्ञान की अन्य शाखाओं के साथ भौतिक मानव विज्ञान के सम्बन्धों की चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-34, 'अन्य अध्ययन विषयों के साथ भौतिक/जैविक मानव विज्ञान का संबंध'

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) पुरातत्व मानव विज्ञान के वर्तमान विषयक्षेत्र

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-32, प्रश्न-10

(ख) भाषाई मानवविज्ञान

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-18, 'भाषाई मानव विज्ञान'

(ग) ब्रिटिश स्कूल

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-4, पृष्ठ-55, प्रश्न-5

(घ) क्षेत्रकार्य (फील्डवर्क) में नैतिकता

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-71, 'क्षेत्रकार्य में नैतिकता'

खंड-ख

प्रश्न 5. भारत में भौतिक मानव विज्ञान के विकास की संक्षेप में चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-57, 'परिचय' तथा पृष्ठ-59, 'भारत में भौतिक/जैविक मानव विज्ञान का विकास'

प्रश्न 6. क्षेत्र कार्य परम्परा के इतिहास का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-6, पृष्ठ-76, प्रश्न-6

प्रश्न 7. पुरातत्व मानव विज्ञान में डेटा (तथ्य) संकलन की विधि पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-119, 'पुरातत्व मानव विज्ञान में आँकड़ा संग्रह के तरीके'

प्रश्न 8. निम्नलिखित पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) अनुसंधान डिजाइन तैयार करना

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-137, 'अनुसंधान की रूपरेखा का निरूपण'

(ख) वैयक्तिक अध्ययन (केस स्टडी) प्रविधि

उत्तर–वैयक्तिक अध्ययन के संदर्भ में हर्बर्ट स्पेन्सर अपने नृवंशविज्ञान संबंधी कार्य में सामग्री का उपयोग करने वाले पहले समाजशास्त्री थे। एक केस अध्ययन में एक विशेष कार्यक्रम, घटना या तथ्य का गहन शोध शामिल होता है, जहां एक समुदाय या लोगों का समूह सीधे शामिल या प्रभावित होता है। इस प्रकार के अध्ययन में मानव मस्तिष्क के पास घटनाओं और तथ्यों को याद करने का एक तरीका है, जो अपने स्वयं के लिए प्रासंगिक है। इस प्रकार विभिन्न लोगों के मामले के अध्ययन प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से उस घटना से जुड़े होते हैं, जब वे एक ही संदर्भ में जानकारी प्रदान कर सकते हैं, लेकिन ये विभिन्न दृष्टिकोणों या यादों के स्तर और घटना की समझ के आधार पर होते हैं।

इस संबंध में केस स्टडी एक समग्र पद्धति है, जो हमें किसी एक घटना या घटना पर एक सर्वांगीण दृष्टिकोण प्राप्त करने में सक्षम बनाती है। कुछ मानवविज्ञानी, जैसे–मैक्स ग्लकमैन और वैन वेलसन ने भी इसका आविष्कार किया था, जिसे विस्तारित मामले विधि के रूप में जाना जाता था। इसका उपयोग अक्सर संघर्षों और कानूनी विवादों और मामलों के विश्लेषण के लिए किया जाता था

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

और मूल रूप से किसी मामले या घटना का दीर्घकाल तक पालन किया जाता था, ताकि किसी को न केवल संरचनाओं और मानदंडों में एक अंतर्दृष्टि मिल सके, अपितु सामाजिक प्रक्रियाओं में भी अंतर्दृष्टि मिल सके।

(ग) नृजातीय-पुरातत्व

उत्तर–एक अध्ययन के रूप में पुरातत्व ऐतिहासिक है। एक एकल पुरातात्विक स्थल में हमेशा उन सभी सांस्कृतिक घटनाओं और व्यवहारों के साक्ष्य शामिल होते हैं, जो उस स्थान पर सैकड़ों या हजारों वर्षों से हो सकते हैं। उस समय के दौरान वहां हुई प्राकृतिक वस्तुओं का उल्लेख नहीं किया जा सकता है। इसके विपरीत नृवंशविज्ञान समकालिक है, जिसका अध्ययन किया जा रहा है, वहीं शोध के दौरान घटित होता है। नृजातीय पुरातत्व, पुरातत्व अध्ययनों में नृवंशविज्ञान संबंधी ज्ञान का अनुप्रयोग है।

पुरातत्वविद् अतीत के समाजों का अध्ययन मुख्य रूप से उनके भौतिक अवशेषों, जैसे–इमारतों, औजारों, भौतिक संस्कृति का निर्माण करने वाली कलाकृतियों के माध्यम से करते हैं, लेकिन समस्या यह है कि भौतिक संस्कृति की व्याख्या मानवीय संदर्भ में कैसे की जाए, इस पर पुरातात्विक कार्य नृवंशविज्ञान के साथ ओवरलैप होते हैं, इसलिए इस समस्या से निपटने के लिए पुरातत्वविदों ने नृजातीय पुरातत्व की नई अवधारणा विकसित की है। नृवंश पुरातत्व, नृवंशविज्ञान के समान, लेकिन यह समझने के लिए विशिष्ट उद्देश्य के साथ कि ऐसे समाज भौतिक संस्कृति का उपयोग कैसे करते हैं।

नृजातीय पुरातत्व एक शोध तकनीक है, जिसमें किसी पुरातात्विक स्थल पर पाए गए पैटर्न को समझने के लिए जीवित संस्कृतियों की जानकारी नृवंशविज्ञान और प्रयोगात्मक पुरातत्व के रूप में, का उपयोग करना शामिल है। एक नृवंशविज्ञानी किसी भी समाज में चल रही गतिविधियों के बारे में साक्ष्य प्राप्त करता है और उन अध्ययनों का उपयोग पुरातात्विक स्थलों में देखे गए पैटर्न को समझने और बेहतर तरीके से समझने के लिए आधुनिक व्यवहार से सादृश्य निकालने के लिए करता है। नृजातीय पुरातत्व को "भौतिक संस्कृति के उत्पादन को रेखांकित करने वाले व्यावहारिक संबंधों को समझने की दृष्टि से समकालीन संस्कृतियों का अध्ययन के रूप में" परिभाषित किया जा सकता है।

(घ) एमिक तथा एटिक दृष्टिकोण

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-110, प्रश्न-3 ■■

NEERAJ PUBLICATIONS www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

मानव विज्ञान और शोध विधियां
(Anthropology and Research Methods)

मानव विज्ञान की परिभाषा, कार्यक्षेत्र और महत्त्व
(Definition, Scope and Significance of Anthropology)

1

परिचय

मनुष्य ने स्वयं अपनी दुनिया का निर्माण किया है। विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक एवं व्यावहारिक जीवन की परिस्थितियां मानवीय रचनाओं एवं प्रकार्यों को परिलक्षित करती हैं। अतः मानव जीवन से संबंधित विभिन्न विषयों को जानने-समझने के लिए इसका एक विज्ञान विषय के रूप में अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है। मानव जीवन एक विषय को समझने में सहायता करता है। संक्षेप में, मानव विज्ञान मानव एवं उसके समाज को वैज्ञानिक तथा समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से समझने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अध्याय का विहंगावलोकन

मानव विज्ञान की परिभाषा

मानव विज्ञान मानव अस्तित्व से जुड़े चार महत्त्वपूर्ण विषयों में बाँटा गया है, जो मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाते हैं। एक मानवविज्ञानी इन सभी विषयों का विस्तृत अध्ययन करता है। ये विषय हैं–

- सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान,
- जैविक-शारीरिक मानव विज्ञान,
- पुरातत्व,
- भाषाई मानव विज्ञान।

साधारणतया अनेक राष्ट्रों में छात्र उपर्युक्त किसी भी एक विषय में विशेषज्ञता प्राप्त करके परास्नातक डिग्री प्राप्त कर सकते हैं अथवा शोध कार्य भी सम्पन्न कर सकते हैं। मानव विज्ञान, मानव अस्तित्व के विभिन्न स्वरूपों; जैसे–संस्कृति, जीवविज्ञान, इतिहास तथा पर्यावरण आदि का समग्र अध्ययन करता है। **एरिक वुल्फ** (1964) के शब्दों में, "मानव विज्ञान एक विषय को बाँधने की तुलना में स्वयं एक विषयवस्तु है। इसका कुछ भाग इतिहास में है, कुछ भाग साहित्य में, कुछ प्राकृतिक विज्ञान में और कुछ भाग सामाजिक विज्ञान में।" यह मनुष्य के आंतरिक एवं बाह्य स्वरूपों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करती है। मानव विज्ञान एक व्यापक विषय के रूप में मनोविज्ञान, इतिहास तथा समाजशास्त्र जैसे अन्य अनेक विषयों को समाहित किए हुए हैं। अमरीकी एंथ्रोपोलोजिकल एसोसिएशन ने मानव विज्ञान को अतीत एवं वर्तमान के मानव अध्ययन के रूप में प्रदर्शित किया है। इसके अतिरिक्त सामाजिक, जीव विज्ञान, मानविकी तथा भौतिक विज्ञान को भी मानवशास्त्र में सम्मिलित किया गया है। इस विषय का उद्देश्य मानव विज्ञान के प्रयोग से मानव समस्याओं को हल करना है। मानव विविधता को समझकर सांस्कृतिक एवं जैविक विविधता का अध्ययन करना भी इसका महत्त्वपूर्ण उद्देश्य है।

समग्र/एकीकृत अध्ययन

जैविक, पुरातात्विक तथा सांस्कृतिक आयामों की सहायता से मानव इतिहास तथा वर्तमान का अध्ययन अत्यन्त रुचिकर है। सिंधु घाटी की सभ्यता के विषय में जानकारी प्राप्त करना इसी विषय का एक जीवंत उदाहरण है, जिसमें लिपियों के अभाव में अतीत को कलाकृतियों, मुहरों, मूर्तियों तथा अन्य दैनिक प्रयोग की वस्तुओं के आधार पर वैज्ञानिक विश्लेषणों की सहायता से समझने का प्रयास किया गया था। हड़प्पा संस्कृति के कंकालों का विश्लेषण भी अनेक महत्त्वपूर्ण तथ्यों पर प्रकाश डालता है, जहाँ मातृसत्तात्मक समाज में रहने वाली महिलाओं की स्थिति पितृसत्तात्मक समाजों की तुलना में कहीं अधिक श्रेष्ठ जान पड़ती है।

तुलनात्मक विज्ञान

मानव विज्ञान विषय का आरंभ विभिन्न संस्कृतियों के मध्य तुलनात्मक अध्ययन एवं समानताओं को समझने के रूप में हुआ था। समय के साथ इस विषय में अनेक नवीन विचारधाराओं का विकास हुआ तथा इसके अनुरूप सामाजिक संरचना एवं समाज नियंत्रण कानूनों के मध्य तुलना भी की गई ताकि सामान्यीकरण तक पहुँचा जा सके। जहाँ एक ओर, तुलनात्मक विधि ने 'सरल'

www.neerajbooks.com

एवं 'जटिल' समाजों के बीच श्रेष्ठता और विकास के आधार पर विवाद को जन्म दिया, वहीं नवीन विचारधाराओं ने सांस्कृतिक सापेक्षता के विचार को बल दिया, जिसके अनुसार प्रत्येक संस्कृति को अपने विशिष्ट रूप में समझना महत्त्वपूर्ण है।

क्षेत्र कार्यविधि

क्षेत्र कार्यविधि मानव विज्ञान की महत्त्वपूर्ण कार्यविधि है, जिसके अंतर्गत मानव वैज्ञानिक लगभग एक वर्ष तक सांस्कृतिक समूह में रहने वाले स्थानों; जैसे–पहाड़ी, जंगल या तटीय इलाकों में रहने वाले आदिवासी समुदायों को चुनकर उनके बीच समय बिताते हैं तथा अध्ययन के साथ-साथ उनके जीवन की महत्त्वपूर्ण दैनिक गतिविधियों, भाषाओं एवं जीवन के तरीकों को सीखते भी हैं। मालिनोव्स्की द्वारा विकसित इस लोकप्रिय तकनीक में मनोवैज्ञानिक अवलोकन पर आधारित तथ्यों पर निर्भर रहते हैं, न कि लोगों के वक्तव्यों पर।

मानव विज्ञान के उद्देश्य

सांस्कृतिक सापेक्षता

अध्ययन का उद्देश्य विषय विशेष के छात्रों तथा विभिन्न हित -धारकों के स्तर पर परिभाषित किया जा सकता है। छात्रों को मानव एवं सांस्कृतिक विविधताओं के विषय में अवगत कराते हुए मानव विज्ञान विषय वंचित समाजों के लोगों की ओर सबका ध्यान खींचता है। यह विषय मुख्यत: आदिवासी समूहों अथवा किसान समूहों पर शोध करता है। मानव समाजों में सांस्कृतिक विकास क्रमबद्ध रूप से होता है। यह क्रम जनजातीय समाजों से आरंभ होकर अंतत: पश्चिमी संस्कृतियों एवं सभ्यता के स्तर तक भी देखा जा सकता है। इस प्रकार सांस्कृतिक विकास में स्वजातीय उत्कृष्टता का एक अनूठा रूप देखने को मिलता है। इस चरण में उपनिवेशवाद ने आदिम समाजों को सभ्य बनाने में महत्त्वपूर्ण सहयोग दिया। उदाहरणार्थ, भारत में ब्रिटिश मानववैज्ञानिकों ने प्रशासनिक तंत्र में विकास के लिए विभिन्न समाजों का अध्ययन किया। मालिनोव्स्की ने सरल और जटिल समाजों को समान महत्त्व देते हुए बुनियादी आवश्यकताओं के विचार का प्रचार किया।

प्रकृति-पोषण विवाद

विभिन्न मानव विज्ञानविदों में प्रकृति और पोषण दोनों की मानव क्षमताओं तथा व्यक्तियों के निर्धारण संबंधी अलग-अलग विचारधारा है। जाति के संदर्भ में व्याप्त रूढ़ियों का मानव वैज्ञानिकों ने विरोध किया। मानव व्यवहार को विभिन्न अध्ययनों के आधार पर आनुवंशिकी माना गया है।

जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए मानव विज्ञान का उपयोग

मानव विज्ञान ने लोगों के जीवन में अनेक सकारात्मक परिवर्तन किए हैं। इसके माध्यम से लोगों को बेहतर जीवन प्रदान करने के लिए मुख्य रूप से हाशिए वाले वर्गों व आदिवासियों को चुना जाता है तथा उनकी आवश्यकताओं तथा इच्छाओं के विषय में अध्ययन कर उनके अधिकारों की रक्षा की जा सकती है। विशेष मानव ज्ञान के माध्यम से जनजातीय समूहों की स्वदेशी ज्ञान प्रणाली का अध्ययन किया जा सकता है। अनेक परिस्थितियों में मानव वैज्ञानिक दूसरों की भूमि में जाए बिना ही युद्धबन्दियों की संस्कृति का अध्ययन करते हैं। बेनेडिक्स की 'क्राइसेथेमम एंड द स्वोर्ड' इसी संदर्भ पर आधारित रचना है। द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान अमेरिका के अनेक मानव वैज्ञानिकों ने लोगों की खाद्य पद्धति से संबंधित अध्ययन भी किए थे।

सार्वभौमिक बनाम विशिष्ट ज्ञान

इसका उद्देश्य स्थानीय जनसमुदाय को विश्व के साथ जोड़ना था। इस प्रकार, मानव वैज्ञानिकों ने विशिष्ट रूप से सार्वभौमिक संदर्भों को आधार बनाया। इन अध्ययनों को तुलना का आधार भी बनाया गया। उदाहरण के लिए, विभिन्न समाजों में महिलाओं की स्थितियों का अध्ययन कर उनका तुलनात्मक विश्लेषण भी किया जाता है, जिसका प्रयोग करके किसी विशिष्ट समाज में व्याप्त वर्तमान समस्याओं को हल करने के लिए सुझाव भी प्रस्तुत किए जाते हैं। इसी प्रकार, किसी समाज में धर्म एवं उसके कार्यों का अध्ययन कर अवधारणाओं का उन्मुखीकरण एवं पुनर्स्थापन किया जा सकता है। विशिष्ट ज्ञान का प्रयोग जनजातीय समूहों की सामाजिक, आर्थिक और पारिस्थितिकीय स्थितियों का पता लगाने हेतु भी किया जाता है, जिसके आधार पर उनकी उत्तरजीविता स्वयमेव निर्धारित हो जाती है। इस प्रकार की स्वदेशी ज्ञान प्रणाली के प्रयोग से आपदा प्रबंधन योजनाओं को बहुत लाभ मिला है।

मानव विज्ञान के कार्यक्षेत्र

शहरी मानव विज्ञान

मानव विज्ञान अध्ययन आरंभ से ही विभिन्न जनजातीय समूहों एवं आदिवासी समूहों पर किया जाता रहा है। विभिन्न मानव वैज्ञानिक इन समुदायों में हो रहे सांस्कृतिक एवं सामाजिक बदलावों में विशेष रुचि रखते हैं। 1960 के दशक के बाद शहरी मानव विज्ञान के रूप में मानव विज्ञान की एक नई शाखा विकसित हुई, जिसमें तेजी से विकास की ओर बढ़ रही शहरी आबादी का ग्रामीण एवं जनजातीय समुदायों पर प्रभाव का अध्ययन भी किया जाने लगा। इन इलाकों में स्थानांतरण एवं विस्थापन की बढ़ती दर को देखते हुए मानव वैज्ञानिकों ने 'शहरों में किसान' जैसे अध्ययनों पर जोर दिया, जिसमें प्रवासी समुदाय के सामाजिक तथा सांस्कृतिक परिवर्तनों पर ध्यान दिया गया। पुरातत्वविदों ने भी शहरी केंद्रों के विकास की गति को देखते हुए चिंता जताई तथा शहरी मानव विज्ञान में सहयोग दिया।

मानव विज्ञान पद्धतियां

मानव विज्ञान की प्रायोगिक शाखा ने समुदाय की समस्याओं, के हल के लिए तीव्र ग्रामीण मूल्यांकन (आर.आर.ए.) तथा सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन (पी.आर.ए.) जैसे उपकरणों का प्रयोग कर हल सुझाए। सहभागिता ग्रामीण मूल्यांकन के अंतर्गत अंदरूनी लोगों के परिप्रेक्ष्य से परिस्थिति को समझकर किसी भी

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

समस्या का हल निकाला जा सकता है। उदाहरण के लिए, किसी बाढ़ प्रभावित क्षेत्र की समस्या के निवारण के लिए लोग सुरक्षित मार्ग का मानचित्र बनाकर वैकल्पिक मार्ग का सुझाव दे सकते हैं, क्योंकि वे ही इलाके को भली-भाँति जानते हैं। विकास विकल्पों के आधार पर विभिन्न जनजातीय समुदायों को उनकी भूमि से विस्थापित कर दिया जाता है। चूँकि ये भू-भाग खनिजों एवं वन संपत्ति से भरपूर हैं। ऐसी जनजातियों के अधिकारों की रक्षा के लिए मानव वैज्ञानिक आवश्यक प्रयास भी कर रहे हैं।

व्यावसायिक प्रबंधन

मानव वैज्ञानिकों ने व्यवसाय प्रबंधन और आपदा प्रबंधन जैसे चुनौतीपूर्ण क्षेत्रों में भी कदम रखा है। समाज और संस्कृति में होने वाले विभिन्न परिवर्तनों को समझने में मानव वैज्ञानिकों को निपुणता प्राप्त है, जिसका प्रयोग अंतर्सांस्कृतिक व्यापार एवं व्यावसायिक प्रक्रियाओं को समझने के लिए किया जाता है। व्यापारिक गतिविधियाँ, चूँकि विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के बीच संपन्न होती हैं इसलिए मानव वैज्ञानिक इन्हें भलीभाँति समझ पाते हैं। मानव विज्ञान उपकरण की त्रिस्तरीय शृंखला में सम्मिलित हैं–

- एक बहुराष्ट्रीय कॉरपोरेट बिजनेस हाउस की संगठनात्मक संरचना और संस्कृति।
- लाभ अधिकतमीकरण के लिए उत्पाद डिजाइन में परिवर्तन हेतु उपभोक्ताओं और ग्राहकों का व्यवहार।
- सामाजिक जीवन शैली एवं सामाजिक संस्थानों; जैसे– परिवार, विवाह पद्धति आदि पर बाजार संस्कृति का प्रभाव।

जैविक/शारीरिक मानव विज्ञान

संपूर्ण विश्व में बढ़ते आपदा स्तर के चलते जीवन एवं संपत्ति का ह्रास भी बढ़ गया है। आपदा प्रबंधन कार्यक्रमों में राहत कार्यक्रम के साथ-साथ आपदा पूर्व तैयारियों पर भी ध्यान दिया जाने लगा है। आपदाओं एवं प्राकृतिक घटनाओं का दुष्परिणाम सामाजिक-स्थानिक कमजोरियों के कारण अधिक भयावह हो जाता है। मानव विज्ञानविद इन स्थानिक कमजोरियों को दूर करने के लिए महत्त्वपूर्ण प्रयास कर रहे हैं।

मानव विज्ञान में जैविक इकाइयों के रूप में मनुष्यों का अध्ययन किया जाता है। मानव जीवाश्मों के अध्ययन से वैज्ञानिक, मनुष्यों के इतिहास को जानने का प्रयत्न करते हैं। आधुनिक मानव को पीछे की जड़ों का विश्लेषण, मानवीय विविधता, क्षेत्रों में रोग प्रसार तथा आनुवंशिक स्तर पर मानव अनुकूलन जैसे संदर्भों को समझने के लिए मानव आनुवंशिकी का अध्ययन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। मानव समाज के जैविक तथा सामाजिक-आर्थिक कारक मिलकर मानव विकास एवं पोषण का विश्लेषण करते हैं।

पुरातात्विक मानव ज्ञान

पुरातात्विक मानव विज्ञान के अंतर्गत पुरातन समाजों, संस्कृतियों आदि का अध्ययन कलाकृतियों, गुफाचित्रों के माध्यम से किया जाता है। इस प्रकार, पुरातत्व मानव वैज्ञानिक बिना किसी लिखित रिकॉर्ड वाली पुरातन जीवन शैलियों के पुनर्निर्माण का प्रयास भी करते हैं।

महत्त्व

इस प्रकार मानव विज्ञान की शाखाएँ विस्तृत रूप से मानव जीवन के सभी क्षेत्रों को संजोए हुए हैं। मानव विज्ञान विभिन्न संस्कृतियों के अध्ययन के साथ हमें अधिक सक्षम एवं निपुण बनाने में सहायक है।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. मानव विज्ञान में कितनी उपशाखाएँ हैं?

उत्तर–मानव विज्ञान एक गहन अध्ययन है, जिसमें मानव विज्ञान के सभी आयामों को सम्मिलित किया गया है। सरलता की दृष्टि से मानव विज्ञान को चार उपशाखाओं में विभाजित किया गया है। ये सभी शाखाएँ मानव जीवन के विभिन्न पहलुओं को प्रदर्शित करती हैं–

1. सामाजिक-सांस्कृतिक मानव विज्ञान
2. जैविक/शारीरिक मानव विज्ञान
3. पुरातत्व मानव विज्ञान
4. भाषाई मानव विज्ञान

1. सामाजिक-सांस्कृतिक मानव जीवन–मानव विज्ञान एक विषय के रूप में विभिन्न समय और स्थानों पर मनुष्य का अध्ययन करता है। यह अनेक संस्कृतियों की तुलनाओं पर आधारित एक समग्र अध्ययन है। इस तुलनात्मक विधि से ही प्राप्त निष्कर्ष मानव के सामान्य जीवन पर आधारित होते हैं। लोगों के बीच समानताएँ तथा वैचारिक मतभेदों का आधार सांस्कृतिक विविधता होती है। पर्यावरण का संस्कृति पर पड़ने वाला प्रभाव भी इस विषय के अध्ययन का महत्त्वपूर्ण आयाम है। मानव विज्ञान का उद्देश्य स्थानीय लोगों को पूरे विश्व के साथ जोड़ना है। क्षेत्रीय स्तर पर कार्य करके ही मानव वैज्ञानिक मानव विज्ञान अनुसंधान करता है तथा अन्य संस्कृतियों को बेहतर रूप से समझ सकता है।

2. जैविक/शारीरिक मानव विज्ञान–मानव विज्ञान मानव प्रजातियों की उत्पत्ति और विकास को समझने से संबंधित है। मनोवैज्ञानिक मानव प्रजातियों की उत्पत्ति तथा विकास को समझने में रुचि रखते हैं। वे मानव भिन्नता के अस्तित्व के बारे में जाँच करते हैं तथा इसके बदलावों के पीछे के कारणों को भी ढूँढ़ने की कोशिश करते हैं। मानव विज्ञान जैविक इकाइयों के रूप में मनुष्यों का अध्ययन करता है। मानव वैज्ञानिक मानव जीवाश्मों के वैज्ञानिक अध्ययन तथा मानव आनुवंशिकी से अत्यधिक चिंतित हैं। इस प्रकार, मानव जीवाश्मों के वैज्ञानिक अध्ययन के द्वारा मनुष्यों के विकासवादी इतिहास को जानने की कोशिश की जाती है। मानव जीवाश्मों के माध्यम से मानव वैज्ञानिक मनुष्यों की जड़ों और प्रस्थान के बिंदुओं का पता लगाने का प्रयास करते हैं, जिससे आधुनिक मानव का विकास हुआ है। जैविक/शारीरिक मानव विज्ञान मानवीय विविधता, रोग, मानव अनुकूलन आदि को समझने में सहायक है।

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

3. पुरातत्व मानव विज्ञान–पुराने समाजों तथा संस्कृतियों के अध्ययन को मानव विज्ञान की पुरातात्विक शाखा के अंतर्गत रखा गया है। इस शाखा में प्रमुख रूप से ऐसे समाजों के पुनर्निर्माण पर बल दिया गया है, जो कलाकृतियों तथा गुफाचित्रों आदि के माध्यम से प्रकट हुए हैं। साथ ही ऐसे लोगों की जीवन-शैली को पुनर्विकसित करने का प्रयास किया जाता है, जिनका कोई लिखित प्रमाण प्राप्त नहीं हो पाया है तथा जिनकी लिपि को अभी तक समझा नहीं जा सका है।

4. भाषाई मानव विज्ञान–मानव विज्ञान की इस शाखा में अनेक वैश्विक भाषाओं के विभिन्न तथ्यों को उद्धृत किया जाता है, जैसे–उनकी उत्पत्ति एवं विकास आदि। इसमें मौखिक और लिखित भाषा का अध्ययन किया जाता है। भाषाओं और बोलियों के तुलनात्मक अध्ययन की भी संभावना होती है। इसके माध्यम से यह पता लगाया जाता है कि किस तरह सांस्कृतिक आदान-प्रदान से विभिन्न संस्कृतियों, भाषाओं आदि पर असर पड़ा है और किस प्रकार भाषा विभिन्न सांस्कृतिक रीति-रिवाजों और प्रथाओं की सूचक है। भाषाई मानव विज्ञान सांस्कृतिक मानव विज्ञान से घनिष्ठ रूप से संबंधित है।

प्रश्न 2. गहन क्षेत्रकार्य विधि को किसने लोकप्रिय किया?

उत्तर–गहन क्षेत्रकार्य विधि मानव विज्ञान की पहचान है। इस विधि को बी. मालिनोव्स्की ने लोकप्रिय किया। इस विधि के अनुसार प्रत्येक मानव वैज्ञानिक को क्षेत्र (फील्ड) में पर्याप्त समय (लगभग एक वर्ष) व्यतीत करना चाहिए। परंपरागत रूप से एक सांस्कृतिक समूह में रहने वाले लोगों के स्थान को क्षेत्र (फील्ड) के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। अधिकांशत: मानव वैज्ञानिक ऐसे आदिवासी समुदायों को अपना क्षेत्र चुनते हैं, जो दुर्गम पहाड़ियों, जंगलों अथवा तटीय इलाकों में बसे होते हैं। मानव जीवन के अधिकांश समर्थकों ने ऐसे ही समुदायों के बीच अपने क्षेत्र का चयन किया। उदाहरण के लिए–

- मालिनोव्स्की ने पापुआ न्यू गिनी में रहने वाले ट्रोब्रिंड आइलैंड्स के बीच काम किया।
- इवांस प्रिचर्ड ने एंग्लो-मिस्र सूडान के न्यूअर समुदाय के बीच काम किया।
- रैडक्लिफ ब्राउन ने अंडमान द्वीप समूहों के बीच काम किया।
- मार्गरेट मीड ने सामोआ के बीच काम किया।

गहन क्षेत्रकार्य विधि के अनुसार क्षेत्रीय अनुसंधानकर्त्ता से यह अपेक्षा की जाती है कि वह विशिष्ट क्षेत्र के लोगों के साथ रहते हुए उनकी भाषा और जीवन-शैली भी सीखेगा। साथ ही, दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में भाग लेना, विभिन्न संस्थानों की कार्य निष्पादन शैली का अध्ययन आदि भी गहन क्षेत्रकार्य विधि का ही हिस्सा है।

मालिनोव्स्की का मानना था कि मानव विज्ञानविद को मात्र लोगों पर निर्भर नहीं रहना चाहिए कि वे क्या कहते हैं और क्या करते हैं अपितु उन्हें स्वयं निरीक्षण करना चाहिए कि वे लोग वास्तव में क्या करते हैं, क्योंकि लोग, समाज का सकारात्मक आपेक्ष दिखाने के लिए वास्तविक तथ्यों का छिपाव भी कर सकते हैं। एक आदर्श समाज के रूप में स्वयं को प्रदर्शित करने के लिए, वे प्रतिनिधित्व की राजनीति में शामिल होकर वास्तविकता छिपा सकते हैं। इस प्रकार, एक शोधकर्त्ता को गहन क्षेत्रकार्य विधि के अंतर्गत लोगों के विचारों और गतिविधियों को पूरा करने के तरीके सीखना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रश्न 3. प्रतिभागी निरीक्षण क्या है?

उत्तर–एक क्षेत्रीय अनुसंधानकर्त्ता शोध कार्य हेतु विशिष्ट क्षेत्र के लोगों के साथ रहते हुए, उनकी भाषा और जीवन के तरीकों को सीखता है तथा उनका अध्ययन भी करता है। साथ ही, वह लोगों के साथ रोजमर्रा के जीवन में होने वाली गतिविधियों का प्रतिभागी भी बनता है। अनुसंधानकर्त्ता से यह अपेक्षा की जाती है कि वह देखे कि लोग और उनके विभिन्न संस्थान किस प्रकार कार्य करते हैं। इस विधि को प्रतिभागी निरीक्षण कहा जाता है। इस विधि को नियोजित करके एक क्षेत्र कार्यकर्त्ता उस समुदाय के सामाजिक जीवन में प्रतिभागी बनता है, जिसका वह अध्ययन कर रहा है। साथ ही, वहाँ के लोगों की सांस्कृतिक और सामाजिक जीवन-शैली के विषय में बातचीत भी करता है।

प्रश्न 4. मानव विज्ञान का मुख्य उद्देश्य क्या है?

उत्तर–मानव विज्ञान के मुख्य उद्देश्य दो स्तरों पर परिभाषित किए जा सकते हैं–

(क) छात्रों के स्तर पर

(ख) विभिन्न हितकारकों के स्तर पर, जैसे–प्रशासक, विचारक, शोधकर्त्ता आदि।

(क) छात्रों के स्तर पर मानव विज्ञान के उद्देश्य–मानव विज्ञान का उद्देश्य छात्रों को मानव और सांस्कृतिक विविधताओं के विषय में जागरूक करना तथा उनको बढ़ावा देना है। छात्रों को जीवन की सम-विषम परिस्थितियों के संदर्भ में सकारात्मक दृष्टिकोण प्रदान करता है। मानव विज्ञान मनुष्यों के जैविक तथा सामाजिक दोनों आपेक्षों को ध्यान में रखता है। मानव विज्ञान में अधिकतर शोध हाशिये पर स्थित मानव समुदायों पर आयोजित किए जाते हैं, जिनमें आदिवासी और किसान समूह मुख्य हैं।

(ख) विभिन्न हितकारकों के स्तर पर मानव विज्ञान वे उद्देश्य–एक अध्ययन विषय के रूप में मानव विज्ञान का आरंभ मानव और सांस्कृतिक विकास का अध्ययन करने के उद्देश्य से हुआ है। सांस्कृतिक विकास की ही भांति मानव विकास का आरंभ सरल-जटिल सांस्कृतिक और सामाजिक लक्षणों से चरणबद्ध रूप से हुआ है। अत: अधिकतर जनजातीय समुदाय सांस्कृतिक विकास के आरंभिक चरण को प्रदर्शित करते हैं तथा कालांतर में पश्चिमी

www.neerajbooks.com